मैं तुमसे यह पूछता हूं, उन पांचों में किस का सत सरस हुआ. तब राजा बिक्रमाजीत बोला कि राजा का सत अधिक हुआ. बैताल बोला किस कारन. तब राजा ने जवाब दिया कि खाविंद के वास्ते जी देना चाकर को उचित है. क्योंकि उसका यही धर्म है. लेकिन, राजा ने जो चाकर के लिये राजपाट छोड़, जान को तिनके के बराबर न जाना, इस बाइस से राजा का सत सिवाय हुआ. इतनी बात सुन बैताल फिर उसी श्मशान के दरख़्त में जा लटका.

चौथी कहानी.

राजा वहां जा फिर बैताल को बांधकर ले चला. तब बैताल बोला कि ऐ राजा! भोगवती नाम एक नगरी है. वहां का राजा रूपसेन. और चूड़ामन(१) नाम एक तोता उसके पास है. एक दिन उस तोते से राजा ने पूछा तू क्या क्या जानता है. तब सूआ बोला कि महाराज! मैं सब कुछ जानता हूं. राजा ने कहा जो तू जानता है तो बतला कि मेरे बराबर सुन्दर नायका कहां है. तब उस तोते ने कहा महाराज! मगध देस में मगधेश्वर नाम राजा है. और उसकी बेटी का नाम चंद्रावती. तुम्हारी शादी उसके साथ होवेगी. वह अति सुंदरी है, और बड़ी पंडित.

(१) चूड़ामणि.

राजा ने, उस तोते से यह बात सुन, एक चंद्रकांत नाम योतिषी को बुलाकर पूछा कि हमारा ब्याह किस कन्या से होवेगा. उसने भी अपने नजूम के इलम से मअ्लूम करके कहा, चंद्रावती नाम एक कन्या है; उसके साथ तुम्हारी शादी होवेगी. यह बात राजा ने सुन, एक ब्राह्मण को बुलवा, सब कुछ समझा, राजा मगधेश्वर के पास भेजने के वक्त यह कहा अगर हमारे ब्याह की बात पक्की कर आओगे तो हम तुम्हें खुश करेंगे. यह बात सुन, ब्राह्मण रवाना हुआ.

और वहां मगधेश्वर राजा की बेटी के पास एक मैना थी; कि उसका नाम मदनमंजरी था. इसी तरह से, उस राजकन्या ने भी एक दिन मदनमञ्जरी से पूछा कि मेरे लायक़ शौहर कहां है? तब सारिका बोली भोगवती नगरी का राजा रूपसेन है; सो तेरा पति होगा. ग़रज़, अनदेखे एक का एक फ़रेफ़्ता हुआ था; कि चंद रोज़ के अरसे में वह ब्राह्मण भी वहां जा पहुंचा, और उस राजा से अपने राजा का संदेसा कहा. उसने भी उसकी बात मानी; और अपना एक ब्राह्मण बुलवा, उसे टीका और सब रसूम की चीजें सौंप, उसी ब्राह्मण के साथ भेजा; और यह कह दिया कि तुम हमारी तरफ़ से जाकर बिनती कर राजा को तिलक देके जल्दी चले आओ. जब तुम आओगे तब हम शादी की तैयारी करेंगे.

अलक़िस्सः, ये दोनों ब्राह्मण वहां से चले. कितने दिनों में राजा रूपसेन के पास आन पहुंचे; और सब अह्-

वाल वहां का कहा. यह सुन राजा खुश हो सब तैयारी कर व्याह करने को चला. बअ्द चंद रोज़ के, उस देस में पहुंच, शादी कर, दान दहेज़ ले, राजा से बिदा हो, अपने देस को चला. राजकन्या ने भी, चलते वक़्त, मदन-मंजरी का पिंजरा साथ ले लिया. कितने दिनों के पीछे, अपने देस में आन पहुंचे; और सुख से अपने मंदिर में रहने लगे.

एक दिन की बात है; कि दोनों पिंजरे तोते मैंना के गद्दी के पास धरे हुए थे, कि राजा रानी आपस में कहने लगे, अकेले रहने से किसू का दिन नहीं कटता. इस से बिहतर यह है, कि तोते मैंना की बाहम शादी कर, दोनों को एक पिंजरे में रखिये तो ये भी खुशी से रहें. आपस में इस तौर की बातें कर, एक बड़ा सा पिंजरा मंगवा, दोनों को उस में रक्खा.

चंद रोज़ के बअ्द, राजा रानी, आपस में बैठे कुछ बातें करते थे कि तोता मैंना से कहने लगा कि दुनिया में भोग असल है; और जिन्ने, जगत में पैदा होके, भोग नहीं किया, उसका जनम नाहक़ गया. इससे तू मुझे भोग करने दे. यह सुन के, सारिका बोली मुझे पुरुष की इच्छा नहीं. तब उसने पूछा किस लिये? मैंना बोली कि पुरुष पापी, अधर्मी, दग़ाबाज़, स्त्रीहत्या करनेवाले होते हैं. यह सुन के, तोते ने कहा कि नारी भी दग़ाबाज़, झूठी, बेवक़ूफ़, लालची, हत्यारी होती है.

जब, इस तरह से, दोनों झगड़ने लगे तो राजा ने

पूछा तुम किसवास्ते आपस में झगड़ते हो? मैंना बोली महाराज! पुरुष पापी स्त्रीघातक होते हैं. इसवास्ते मुझे पुरुष की चाह नहीं. महाराज! मैं एक बात कहती हूं, आप सुनिये कि मर्द ऐसे होते हैं.

ईलापुर नाम एक नगर. और वहां महाधन नाम एक सेठ था. कि उसके औलाद न होती थी. वह इस-वास्ते हमेशः तीर्थ, व्रत करता; और नित्त पुराण सुनता; ब्राह्मणों को बज़्त सा दान दिया करता. ग़रज़, कितनी मुद्दत में, भगवान की मरज़ी से, उस साहके एक लड़का पैदा हुआ. उन्ने बड़ी धूम से उसकी शादी की; और ब्राह्मणों को भाटों को बज़्तसा दान दिया; और भूखे, प्यासे कंगालों को भी बज़्त कुछ दिया. जब कि वह पांच बरस का हुआ तो उसे पढ़ने को बिठाया. वह यहां से तो पढ़ने को जाता, और वहां जाकर लड़कों में जूआ खेला करता.

बअ्द चंद रोज़ के, वह साह मर गया; और यह मुख़्तार दो दिन को तो जूआ खेला करता, और रात को रंडीबाज़ी. इसी तरह से, कई बरस में, अपना सारा धन खो, लाचार हो, देस से निकल, ख़राब होता हुआ, चंद्र-पुर नगर में जा पहुंचा. वहां हेमगुप्त नाम एक साहूकार था, कि उसके बज़्त दौलत थी; यह उसके पास गया, और अपने बाप का नाम निशान बताया. वह सुनतेही खुश हुआ; इसे उठकर मिला, और पूछा तुम्हारा आना क्योंकर हुआ. तब यह बोला कि मैं जहाज़ से एक दीप

में सौदागरी को गया था. और वहां जा, उस माल को बेच, और माल की भरती कर, जहाज़ ले अपने देश को चला. नागहां एक ऐसा तूफ़ान आया कि जहाज़ तबाह हो गया; और मैं एक तख़्ते पर बैठा रह गया. सो बहता बहता यहां तलक आन पहुंचा हूं. लेकिन शर्म आती है कि माल दौलत तो सब जाती रही. अब मैं इस हालत से अपने शहर के लोगों को क्या मुंह जाकर दिखाऊं.

ग़रज़, जब इस तरह की बातें इसने उसके आगे कीं, तब वह भी मन में बिचारने लगा कि मेरा फ़िक्र भगवान ने घर बैठे ही मिटा दिया; और ऐसा संयोग भगवानही की कृपा से बन पड़ता है. अब देर करनी मुनासिब नहीं. सब से बिहतर यह है कि कन्याके हाथ पीले कर दीजिये. जो कुछ इस वक़्त हो, सो बिहतर है; और कल की किसे ख़बर है. ऐसा कुछ अपने जी में मनसूबः बांध, सिठानी पास आ कहने लगा कि एक सेठ का लड़का आया है; जो तुम कहो तो रत्नावती का ब्याह उसे कर दें. वह भी सुन खुश हो बोली कि साहजी! ऐसा संयोग जब भगवान बनाता है, तब बनता है; क्योंकि घर बैठे मन की कामना पूरी हुई. इससे बिहतर यह है कि देर मत करो; और जल्द पुरोहित को बुलवा, लगन सुधवाय, शादी कर दो. तब उस सेठने ब्राह्मण को बुलवा, शुभ लगन मरूरत ठहराय, कन्या दान कर, बहुतसा दहेज़ दिया. ग़रज़, जब ब्याह हो चुका तो वहीं बाहम रहने लगे.

फिर कितने एक दिनों के पीछे, साह की बेटी से उन्हे कहा, हमें तुम्हारे देस में आये हुए बहुत दिन हुए; और अपने घर बार की कुछ ख़बर नहीं. इससे हमारा चित बहुत उदास रहता है. हम ने सब अहवाल अपना तुम से कहा; अब तुम्हें यह चाहिये कि अपनी मा से इस तरह समझा कर कहो, कि वे राज़ी हो हमें बिदा करें तो हम अपने शहर को जावें. तुम्हारी इच्छा हो तो तुम भी चलो. तब उन्हे अपनी मा से कहा कि बालम हमारे देश को बिदा हुआ चाहते हैं. अब तुम भी वह करो कि जिस में उनके जी को दुख न होवे.

सिठानी ने अपने स्वामी के पास जाकर कहा तुम्हारा दामाद अपने घर जाने की बिदा मांगे है. यह सुनकर साह बोला अच्छा, बिदाकर देंगे. क्योंकि बिराने पूत पर कुछ अपना ज़ोर नहीं चलता. जिसमें उसकी खुशी होगी वही हम करेंगे. यह कह, अपनी बेटी को बुलाकर पूछा तुम अपनी बात कहो, सुसराल जाओगी, या पीहर में रहोगी? इस में लड़की ने शरमाके जवाब न दिया; उलटी फिर आई, और अपने खाविंद से आनके कहा हमारे माता पिता कह चुके हैं कि जिस में उनकी खुशी होगी वह हम करेंगे. तुम हमें मत छोड़ जाइयो. ग़रज़ उस सेठने अपने दामाद को बुला, बहुत सी दौलत दे, बिदा किया; और लड़की का भी डोला एक दासी समेत साथ कर दिया. तब यह वहां से चला.

जब एक जंगल में पहुंचा, उन्हे साहकी बेटी से कहा,

यहां बऊत डर है. जो तुम अपना सब गहना हमें उतार देा, तेा हम अपनी कमर में बांध लें. फिर आगे जब शहर आवेगा तेा तुम पहन लेना. उन्ने सुनतेही, सब ज़ेवर उतार दिया; और उस ने ज़ेवर ले कहारों को बिदाकर, दासी को मार कुए में डाल दिया; और उसको भी ज़ोर से कुए में धकेल, सब गहना ले, अपने देस को चला गया.

इतने में एक मुसाफ़िर उस राह में आया; और रोने की आवाज़ सुनकर, खड़ा हेा, अपने जीमें कहने लगा कि इस जंगल में आदमी के रोने की आवाज़ कहां से आई. यह बिचारकर, उस रोने की आवाज़ की ओर को चला कि एक कुआ नज़र आया. उस में झांका तेा देखता क्या है कि एक स्त्री रेाती है. तब उस औरत को निकाल अहवाल पूछने लगा कि तू कौन है? और किस तरह से इस में गिरी? यह सुन के उसने कहा मैं हेमगुप्त सेठ की बेटी हूं; और अपने बालम के साथ उस के देस को जाती थी. कि इस में चोरोंने आ घेरा; और मेरी दासी को मार, कुए में डाल दिया; और गहने समेत मेरे शौहर को बांधकर ले गये. न उन की मुझे ख़बर है, न मेरी उन्हें. यह सुन, वह बटोही उसे साथ ले आया; और उस सेठ के द्वार पर पहुंचाय गया.

यह अपने मा बाप के पास गई. वे उसे देखकर पूछने लगे कि तेरी क्या गति ऊई? उसने कहा हमें राह में आनके चोरों ने लूटा; और दासी को मार, कुए में डाल,

मुझे एक अंधे कुए में धकेल दिया; और मेरे शौहर को, गहने समेत, बांध के ले चले. जब और धन मांगने लगे, तब उसने कहा जो कुछ था सो तुमने लिया; अब मेरे पास क्या है? आगे यह मुझे ख़बर नहीं कि उसे मारा या छोड़ा. तब उसका बाप बेाला धीया! तू फ़िक्र मत कर. तेरा स्वामी जीता है. भगवान चाहे तो थेाड़े दिनों में आन मिले. क्योंकि, चोर धन के गाहक होते हैं; जीव के गाहक नहीं.

ग़रज़, उस साहने, जो जो गहना उसका गया था उसके बदले और आभूषण देकर, बऊतसा दिलासा दिलदिही की. और वह साहका लड़का भी, अपने घर पहुंच, सब ज़ेवर को बेच, दिन रात रंडीबाज़ी करने लगा; और जूआ खेलने. यहां तलक, कि सब रुपये तमाम ऊए. तब रोटी को मुहताज ऊआ. आख़िर, जब निहायत दुख पाने लगा, तेा अपने मन में एक दिन बिचारा कि सुसराल जा के यह बहानः कीजिये कि तुम्हारे नवासः पैदा ऊआ है. उसकी बधाई देने को मैं आया हूं. यह बात अपने जी में ठान कर चला.

कई दिन में वहां जा पहुंचा. जब उसने चाहा कि घर में पैठे, साम्हने से उसकी स्त्रीने देखा कि मेरा शौहर आता है. ऐसा न हेा कि अपने जी में डरकर फिर जावे. इस में उन्ने नज़दीक आयकर कहा स्वामी! तुम अपने जी में किसी बात की परवा मत करो. मैंने अपने बाप से कहा है कि चोरों ने आन के, दासी को मारा; और मेरा

ज़ेवर उतरवा, मुझे कुए में डाल, मेरे खाविंद को बांध ले गये. यही बात तुम भी कहियो. कुछ चिंता न करो. घर तुम्हारा है; और मैं दासी हूं. यह कहकर वह घर में चली गई. यह उस सेठ के पास गया. उस ने उठकर गले लगा सब अहवाल पूछा. जिस तरह उसको जोरू समझा गई थी, इसने उसी तरह से कहा.

सारे घर में खुशी हुई. फिर सेठने, उसे अशनान करवा, रसोई जिमाय, बहुतसा भरोसा देकरके कहा कि यह घर तुम्हारा है, आनंद से रहो. यह वहां रहने लगा. गरज, कितने एक दिनों के बअद, रात के वक्त साह की बेटी, गहना पहने हुए, उसके पास सोने को आई और सो गई. जब दोपहर रात हुई, उन्ने देखा कि यह गाफ़िल सो गई है. तब एक छुरी ऐसी उसके गले में मारी कि वह मर गई और सारा गहना उसका उतार अपने देश की राह ली.

इतनी बात कह, मैंना बोली महाराज! यह मैंने अपनी आंखों से देखा. इसवास्ते मुझे मरद से कुछ काम नहीं. महाराज! देखो तो पुरुष की जात ऐसी बटपार होती है. कौन, ऐसे से दोस्ती कर, अपने घर में सांप पाले. महाराज! आप इसे बिचारिये कि उस रंडी ने क्या गुनाह किया था.

यह सुनके, राजा ने कहा ऐ तोते! रंडी में ऐब क्या है तू मुझ से कह. तब वह कीर बोला महाराज! सुनिये.

कंचनपुर(१) एक नगर है. वहां सागरदत्त नाम एक सेठ. उसके बेटे का नाम श्रीदत्त. और एक नगर का नाम जयश्रीपुर. वहां सोमदत्त नाम एक सेठ था. और उसकी बेटी का नाम जयश्री. वह उस सेठके बेटे को ब्याही थी. और लड़का किसी मुल्क में सौदागरी के वास्ते गया था. वह अपने मा बाप के यहां रहती थी. गरज, जब उसे सौदागरी में बारह बरस गुज़र गये, और यह यहां जवान हुई, तो एक रोज़ सखी से कहने लगी ऐ बहिन! मेरा जोबन योंहीं जाता है. संसार का सुख मैंने अब तलक कुछ नहीं देखा. यह बात सुन के, सखी ने उससे कहा तू अपने जी में धीरज धर. भगवान चाहे तो तेरा शौहर जल्द आ मिलता है.

इस बात को सुनकर, गुस्से हो, अटारी पर चढ़, झरोखे से झांकी तो देखती क्या है कि एक जवान चला आता है. जब नज़दीक आया तो इसकी और उसकी एका एक चार नज़रें हुईं. दोनों का दिल मिल गया. तब इन्ने अपनी सखी से कहा कि उस शख़्स को मेरे पास ले आ. यह सुन, सखी ने उसे जाकर कहा कि सोमदत्त की कन्या ने तुम्हें एकांत में बुलाया है. पर तुम मेरे घर आइयो. फिर अपने घर का पता उसको बता दिया. उन्ने कहा कि रात को मैं आऊंगा. सखी ने यह सेठ की लड़की से आकर कहा कि उन्ने रातके वक्त आने को कहा. यह सुनके, जयश्री ने सखी से कहा कि तू अपने घर में जा. जब वह

(१) काञ्चनपुर.

आवे मुझे ख़बर करना तो मैं भी घर से सुचित होके चलूंगी.

सखी उसकी बात सुन के अपने घर गई. द्वारे पर बैठ के उसकी राह ताकने लगी. इतने में वह आया. इन्ने उसे अपनी डिज़ड़ी में बिठाकर कहा तुम यहां बैठो, मैं जाकर तुम्हारी ख़बर करती हूं. और आकर जयश्री से कहा तुम्हारा प्रीतम आन पहुंचा है. यह सुन के, उन्ने कहा ज़रा ठहर जा. घर के लोग सो जावें तो मैं चलूं. फिर कितनी एक देर बअ़द, जब आधी रात का अ़मल ज़आ और सब सो गये; तब यह चुपके से उठकर, उसके साथ चली; और एक छिनमें वहां आन पहुंची. और बेइख़तियार दोनों ने उसके घर में मुलाक़ात की. जब चार घड़ी रात बाक़ी रही, यह उठकर अपने घरमें आनके चुप चुपाती सो रही. और वह भी भोरके वक़्त अपने घरको गया.

इसी तरह से, कितने एक दिन बीत गये. निदान, उसका ख़ाविंद भी बिदेस से अपनी सुसराल में आया. जब इनने अपने शौहर को देखा जीमें चिंता करके सखीसे कहा इस सोच में मेरा जी है; क्या करूं? किधर जाऊं? मेरी नींद, भूख, प्यास सब बिसर गई; न ठंडा रुचे है, न गर्म. और जो कुछ अह्वाल अपने चित का था सो सब कहा. ग़रज़, जों तों करके दिन तो काटा. पर शाम के वक़्त, जब उसका शौहर ब्यालू कर चुका, तब उसकी सास ने, एक जुदे चौबारे में सेज बिछवाकर, कहला भेजा

कि तुम वहां जाकर आराम करो. और अपनी बेटी से कहा, कि तू जाकर अपने शौहर की सेवा कर.

वह इस बात को सुन, नाक भौं चढ़ा, चुपकी हो रही. फिर उस की मा ने डांट के उस के पास भेजा. बेबस होके वहां गई और मुंह फेर पलंग पर लेट रही. वह जों जों उस से नेह की बातें करता था तों तों उसे ज़ियादः दुख होता था. फिर तरह बतरह के बस्त्र आभूषण, जो जो हर एक मकान से उस के वास्ते वह लाया था, सो सब दिये; और कहा कि इसे पहन. तब तो उन ने और ख़फ़ा हों भवें तान मुंह फेर लिया. और यह भी लाचार हों सो रहा. क्यौंकि, हारा मांदा राह का था. पर उसे अपने यारकी याद में नींद न आई.

जब वह समझी कि यह नींद से अचेत ज़आ, तब वह हौले हौले उठ, उसे सोता छोड़, अंधेरी रात में निडर अपने दोस्त के मकान को चली; कि राह में एक चोरने उस को देखकर अपने मनमें चिंता की कि यह औरत, गहना पहने ज़ए, आधी रात के वक़्त, अकेली कहां जाती है. यह बात अपने जी में कह उसके पीछे हो लिया. ग़रज़, जों तों यह अपने यारके मकान में पहुंची. और वहां उसे सांप काट गया था. वह मुआ पड़ा था. उन्ने जाना कि सोता है. उसके बिरह की आगकी जली ज़ई जो थी, बेइख़तियार उससे लिपटकर प्यार करने लगी. और चोर दूर से तमाशा देखने लगा.

वहां, एक पीपल के दरख़्त पर, एक पिशाच भी बैठा

हुआ यह तमाशा देखता था. अचानक उस के मन में आया कि उस के बदन में पैठ इस से भोग कीजिये. यह बिचारकर, उसके क़ालिब में आ, भोगकर, आख़िर दांतोंसे उस की नाक काट, उसी दरख़्त पर जा बैठा. चोर ने यह सब अहवाल देखा. और वह, लाचार उसी रंग लहू से चुहचुहाती हुई, सखीके पास गई; और सब माजरा कहा. तब सखी बोला कि तू अपने शौहर पास जलद जा कि आफ़ताब तुलूअ़ न होने पावे. और वहां जाकर, डाढ़ मार के रोइयो; जो कोई तुझ से पूछे तो कहना कि इनने मेरी नाक काट ली है.

यह, सखी की बात सुनतेही, तुरंत जा, डाढ़ें मार मार रोने लगी. इसके रोने की आवाज़ सुन, सारे कुटुंब के लोग आये. देखता क्या है कि उसकी नाक नहीं, नकटी बैठी है. तब वे बोला कि ऐ निलज्जे, पापी, निर्दई, कूढ़मति! बिना अपराध किये इसकी नाक क्यों काटी. वह भी, यह सवांग देख, चिन्ताकर अपने जी में कहने लगा कि चंचल चित का, काले सांप का, शस्त्रधारी का, दुशमन का, बिसवास न कीजिये; और त्रियाचरित्र से डरिये. कबीश्वर क्या बरनन नहीं कर सकता; और योगी क्या कुछ नहीं जानता; मतवाला क्या कुछ नहीं बकता; रंडी क्या नहीं कर सकती. सच है, घोड़ों का ऐब, बादल का गरजना, त्रिया का चरित्र, और पुरुष का भाग; यह देवता भी नहीं जानते, आदमी का तो क्या मक़दूर है.

इतने में उसके बाप ने कोतवाल को यह ख़बर दी. वहां से प्यादे चबूतरे को आये; और इसे बांध कोतवाल के पास लाये. कोतवाल ने राजा को ख़बर की. राजा ने उस से यह अहवाल बुलवाके पूछा, तो उन्ने कहा मैं कुछ नहीं जानता. और सेठ की लड़की से बुलाकर जो पूछा तो उन्ने कहा महाराज! आं देख के मुझ से क्या पूछते हो. फिर राजा ने उस से कहा तुझे क्या सज़ा दें. यह सुन के बोला आप के न्याव में जो ठहरे सो कीजिये. राजा ने कहा इसे ले जाके सूली दो. लोग, राजा की आज्ञा पाके, उसे सूली देने ले चले.

यह संयोग देखो. वह चोर भी वहां खड़ा तमाशा देखता था. जब उसे यक़ीन हुआ कि यह नाहक़ मारा जाता है, तब उन्ने दुहाई दी. राजा ने उसे बुलाकर पूछा तू कौन है? बोला कि महाराज! मैं चोर हूं; और यह बेगुनाह है. नाहक़ इसका ख़ून होता है. आप ने कुछ न्याव न किया. तब राजा ने उसे भी बुलवाया; और चोर से पूछा तू अपने धर्म से सच कह, कि यह मुक़द्दिमा किस तरह से है. तब चोर ने ब्योरेवार अहवाल कहा. और राजा भी अच्छी तरह से समझा. निदान हरकारे भेज, उस रंडी का यार जो मुआ हुआ पड़ा था, उस के मुंह में से नाक मंगवाके देखी. तब जाना कि यह बेतक़सीर है और चोर सच्चा है. फिर चोर बोला कि महाराज! नेकों का पालना, और बदों को सज़ा देनी, राजों का बराबर धर्म चला आता है.

इतनी बात कह कर चूड़ामन तोता बोला महाराज! ऐसे गुनाहों की पूरी नारियां होती हैं. राजा ने उस रंडी का मुंह काला करवा, सिर मुंडवा, गधे पर चढ़वा, नगरी के फेरे दिलवा, कुड़वा दिया; उस चोर और साहूकार बचे को बीड़े दे रुखसत किया.

इतनी कथा कह, बैताल बोला ऐ राजा! इन दोनों में से किसे ज़ियादः पाप हुआ. तब राजा बीर बिक्रमाजीत बोला कि स्त्री को. फिर बैताल बोला कि किस तरह से? यह सुन के राजा ने कहा मर्द कैसाही दुष्ट क्यों न हो, पर उसे धर्म अधर्म का बिचार रहता है. और स्त्री को धर्म अधर्म का कुछ ध्यान नहीं रहता. इसे नारीको बहुत पाप हुआ. यह बात सुनके बैताल फिर चला गया; और उसी दरखत पर जा लटका. फिर राजा जा, उसको पेड़ से उतार, गठड़ी बांध कंधे पर रख ले चला.

पांचवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा! उज्जैन(१) नाम एक नगरी है. और वहां का राजा महाबल. और उसका हरिदास नाम एक दूत था. उस दूत की बेटी का नाम महादेवी. वह अति सुंदरी थी. जब वह बरयेाग हुई तो उसके पिता को चिन्ता हुई, कि इसका बर ढूंढ बिवाह कर दिया

(१) उज्जयिनी.

चाहिये. ग़रज़, एक दिन उस लड़की ने अपने बाप से कहा कि पिता! जो सब गुण जानता हो मुझे उसे दो जो. तब उसने कहा कि जो सब इलम से वाक़िफ़ होगा तेरी शादी मैं उसके साथ कर दूंगा.

फिर एक दिन उस राजा ने हरिदास को बुलाकर कहा, कि दक्षिण दिसा में हरिचंद(१) नाम राजा है; उसके पास तुम जाकर मेरी तरफ़ से क्षेम कुशल पुछो; और उन की क्षेम कुशल के समाचार ले आओ. यह राजा की आज्ञा पाय, बिदा हो, उस राजाके पास, कितने एक दिनों में, जा पहुंचा; और उसे अपने राजा का सब संदेसा कहा; और हमेशः उस राजा के निकट रहने लगा.

ग़रज़, एक दिन की बात है, कि उस राजा ने इस से पूछा ऐ हरिदास! अभी कलयुग(२) का आरंभ हुआ कि नहीं? तब उन्ने हाथ जोड़कर कहा महाराज! कलिकाल बर्तमान है; क्योंकि संसार में झूठ बढ़ा है, और सत घट गया; लोग मुंह पर बात मीठी कहते हैं, और पेट में कपट रखते हैं; धर्म जाता रहा, पाप बढ़ा; पृथ्वी फल कम देने लगी; राजा डांड़ लेने लगे; ब्राह्मण लालची हुए; स्त्रियों ने लाज छोड़ दी; बेटा बाप की आज्ञा नहीं मानता; भाई भाई का इअतिबार नहीं करता; मित्रों से मित्राई जाती रही; खाविंदों से वफ़ा उठ गई; सेवकों ने सेवा छोड़ दी; और जितनी नालायक़ बातें थीं वे सब नज़र आती हैं.

(१) हरिचन्द्र. (२) कलियुग.